नियम की मान्यताएँ
(ASSUMPTIONS OF THE LAW)

अर्थशास्त्र के नियम आर्थिक प्रवृत्तियों के कथन मात्र होते हैं, काल्पनिक एवं सापेक्षिक होते हैं, अर्थात् प्राकृतिक विज्ञान की तरह बिल्कुल ठोस एवं निश्चित नहीं होते हैं। अत: अर्थशास्त्र के प्रत्येक नियम की अपनी-अपनी मान्यताएँ होती हैं, जिनकी विद्यमानता में ही नियम का परीक्षण किया जा सकता है। इसी प्रकार, सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की भी कुछ मान्यताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं :

1. **उपभोग की इकाइयाँ उपयुक्त होनी चाहिए** (The units of consumption should be adequate)—उपभोग की इकाइयाँ उपयुक्त होनी चाहिए अन्यथा सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम सही प्रतीत नहीं होगा, अर्थात् सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की जगह पर सीमान्त उपयोगिता वृद्धि नियम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उदाहरणत:, एक प्यासे व्यक्ति के लिये पानी पीने की इकाई गिलास होनी चाहिये नकि चम्मच। यदि चम्मच को इकाई मान लें, तो पहले चम्मच पानी की तुलना में दूसरे चम्मच पानी से उसे अधिक उपयोगिता की प्राप्ति होगी।

2. **वस्तु की सभी इकाइयाँ गुण एवं आकार में समान होनी चाहिए** (Units of the commodity should be uniform in quality and size)—उपभोग की वस्तु गुण एवं आकार में समान होनी चाहिये अन्यथा यह नियम लागू नहीं होगा। उदाहरणत: ,मान लिया जाय कोई व्यक्ति आम का उपभोग करता है। यदि पहला आम खट्टा हो और दूसरा मीठा, तो स्वाभाविकत: उसे पहले आम से अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। इसी प्रकार मान लिया जाय कोई व्यक्ति रोटी का उपभोग करता है। यदि पहली रोटी 10 ग्राम की हो और दूसरी 20 ग्राम की। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति को दूसरी रोटी से अधिक उपयोगिता की अनुभूति होगी।

3. **उपभोग की क्रिया लगातार होनी चाहिए** (The Process of consumption should be continuous)—उपभोग की क्रिया भी लगातार होनी चाहिए अन्यथा यह नियम लागू नहीं होगा। उदाहरणत: ,मान लिया जाय कि कोई व्यक्ति एक बैठक में पाँच रोटी खा सकता है। यदि वह पाँचों रोटियों का उपभोग एक ही बैठक में करता है तो निश्चित ही उत्तरोत्तर इकाइयों से उसे घटती हुई उपयोगिता मिलती है। किन्तु, यदि वह दो-दो घण्टे के बाद एक-एक रोटी का उपभोग करता है, तो ऐसी परिस्थिति में यह नियम लागू नहीं होगा।

4. **उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं होना चाहिए** (Mental condition of the consumer should not be changed)—जब उपभोक्ता किसी वस्तु का उपभोग कर रहा हो तो उसकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं होना चाहिए अन्यथा यह नियम क्रियाशील नहीं होगा। मान लिया जाय, कोई व्यक्ति 10 रसगुल्ले खाकर अपनी भूख की तृप्ति कर लेता है। अत: ग्यारहवें रसगुल्ले से उसे शून्य उपयोगिता मिलेगी लेकिन यदि वह इसी बीच भांग खा लेता है तो उसकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन हो जायेगा और वह 20-25 रसगुल्ले खा सकता है। इस प्रकार ग्यारहवें रसगुल्ले के बाद भी रसगुल्लों की अगली इकायों से अधिक सीमान्त

Scanned with CamScanner

उपयोगिता प्राप्त होगी। अतः इस नियम के लागू होने के लिए यह आवश्यक है कि उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो।

5. **वस्तु तथा उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए** (Price of the commodity and its substitute should not be changed)—उपभोग की जाने वाली वस्तु एवं उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। वस्तु की उपयोगिता उसके मूल्य से सम्बन्धित होती है। अतः यदि उपभोग की जाने वाली वस्तु का मूल्य कम हो जाये तो उसकी माँग एवं उपयोगिता दोनों बढ़ जायेंगी। इसी प्रकार स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए। मान लिया जाय कि चाय का मूल्य स्थिर रहे और कहवा का मूल्य बढ़ जाये तो चाय की माँग तथा उपयोगिता मे वृद्धि हो जायेगी। अतः सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्रियाशीलता के लिए यह आवश्यक है कि उपभोग की जाने वाली वस्तु एवं स्थानापन्न वस्तु की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

6. **उपभोक्ता की आय, स्वभाव, फैशन तथा आदत मे कोई परिवर्तन नही होना चाहिए** (There should be no change in the income, nature, fashion and habit of the consumer)—उपभोक्ता की आय, स्वभाव, फैशन तथा आदत आदि में परिवर्तन नहीं होना चाहिये, अन्यथा यह नियम लागू नहीं होगा। उदाहरणार्थ, यदि किसी व्यक्ति को सिगरेट पीने की आदत नहीं है, तो उसे सिगरेट के उपभोग से शून्य उपयोगिता प्राप्त होगी। किन्तु यदि उस व्यक्ति को सिगरेट की **आदत** हो जाय तो उसे अब सिगरेट के उपभोग से उपयोगिता प्राप्त होने लगेगी। इसी प्रकार एक **कम आय** वाले व्यक्ति के लिये रंगीन टी. वी. तथा फ्रीज आदि की आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु यदि उसकी आय बढ़ जाय तो रंगीन टी. वी. तथा फ्रीज आदि जैसी चीजों की उसकी आवश्यकता बढ़ जाती है अर्थात् उसके लिये उपयोगिता वाली वस्तुएँ हो जाती हैं। इसी प्रकार जब कोई वस्तु **फैशन** में आ जाती है, तो लोगों के लिये उसकी आवश्यकता बढ़ जाती है। उदाहरणतः, पहले अधिकांश लोग दाँतुन का प्रयोग करते थे किन्तु वर्तमान में टूथ-ब्रुश का प्रयोग फैशन-सा हो गया है। अतः आधुनिक लोग अब टूथ-ब्रुश से अधिक उपयोगिता की अनुभूति महसूस करते हैं।

7. **उपभोग की जाने वाली वस्तु की कीमत स्थिर रहनी चाहिये** (The price of the commodity to be consumed should be fixed)—जिस वस्तु का उपभोग किया जा रहा हो उसकी कीमत स्थिर होनी चाहिये। उदाहरणतः, यदि वस्तु पहले से सस्ती हो जाये तो उसे पाने की इच्छा प्रबल हो जाती है, जिससे कुछ समय के लिये उपयोगिता वृद्धि नियम क्रियाशील होने लगता है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के कारण
(CAUSES OF THE LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY)

यह एक स्वभाविक-सा प्रश्न है कि सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम क्यों लागू होता है। दूसरे शब्दों में, वस्तु की इकायों के उपभोग में वृद्धि के साथ-साथ उनसे प्राप्त सीमान्त उपयोगिता क्यों घटती जाती है ? घटती हुई सीमान्त उपयोगिता का अर्थ यह नहीं होता कि वस्तु की क्रमिक इकाइयाँ क्रमशः एक दूसरे से खराब होती हैं बल्कि उनके गुण में समानता रहने पर भी यह नियम लागू होता है जिसके मुख्य कारण इस प्रकार हैं :

इस नियम के लागू होने का पहला कारण यह है कि **किसी आवश्यकता विशेष की पूर्णरूपेण सन्तुष्टि की जा सकती है**। वस्तुतः आवश्यकता की इसी विशेषता पर सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है। जब तक हमारी आवश्यकता की सन्तुष्टि नहीं हुई रहती है, तब तक किसी वस्तु के लिए हमारी इच्छा अत्यन्त ही तीव्र होती है और जिसके कारण उस वस्तु की उपयोगिता भी अधिक होती है लेकिन अपनी आवश्यकता की सन्तुष्टि के लिए हम ज्यों-ज्यों

Scanned with CamScanner

किसी वस्तु की इकाइयों का उपयोग करते जाते हैं, त्यों-त्यों हमारी आवश्यकता की क्रमशः सन्तुष्टि होती जाती है और सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम क्रियाशील होने लगता है।

इस नियम के लागू होने का दूसरा कारण यह है कि सभी वस्तुएँ एक दूसरे के पूर्णतः प्रतिस्थापक (Substitute) नहीं होतीं। दूसरे शब्दों में, हम एक वस्तु का प्रयोग दूसरी वस्तु के स्थान पर पूर्णतया अच्छी तरह से नहीं कर सकते। अतः जब हम एक वस्तु का उपभोग करते हैं तो उससे दूसरी वस्तुओं की आवश्यकता को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए पैंट के प्रयोग से शर्ट की आवश्यकता को पूरा नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि शर्ट की आवश्यकता विद्यमान रहने के कारण हम ज्यों-ज्यों पैंट का प्रयोग करते जाते हैं, हमारे लिए पैंट की इच्छा की तीव्रता में कमी होती जाती है। यही कारण है कि सीमान्त उपयोगिता में भी कमी होने लगती है। यह बात अन्य वस्तुओं के साथ भी लागू होती है।

Scanned with CamScanner